व्याख्यान-माला "असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम" में नर्मदा महिला संघ की महिलाएँ

सितम्बर 7, 2019

महिलाएँ अब घुट-घुटकर जीने की जगह गाँव के विकास में सहभागी बन रही हैं। नर्मदा महिला संघ का मुख्य उद्देश्य आजीविका के लिये बेहतर अवसर, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकना, हक और अधिकार दिलाना तथा महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी सुनिश्चित करना है। नर्मदा महिला संघ की पदाधिकारियों ने यह बात अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में व्याख्यान-माला 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम" में 'अनहर्ड व्हाइसेस ऑफ वूमेन लीडर्स ऑफ नर्मदा महिला संघ, बैतूल" विषय पर व्याख्यान में कही।

नर्मदा महिला संघ की सदस्य ममता बाई लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी, मसूरी में 3 बार प्रशिक्षु आई.ए.एस. अधिकारियों को संबोधित कर चुकी हैं। उन्होंने कहा कि स्व-सहायता समूह की किसी भी महिला के साथ अत्याचार होता है, तो उसे न्याय दिलाने के लिये संघर्ष करती हूँ। गाँव की महिलाओं के लिये हमेशा जीने-मरने को तैयार रहती हूँ। उन्होंने बताया कि महिलाओं को हिंसा से मुक्ति दिलाने के लिये कई लोगों की शराब छुड़वाई है। सुश्री ममता बाई ने कहा कि मेरे भाई ने तो मात्र पढ़ाई की है, लेकिन मैंने असली पढ़ाई की है।

संध्या बाई ने कहा कि मैं स्व-सहायता समूह में रिकार्ड तैयार करती थी। समूह की महिलाओं ने मुझे गाँव की सरपंच बनाया और अब हम महिलाओं के साथ मिलकर गाँव के विकास की योजना बनाते हैं और उनका क्रियान्वयन करते हैं। उन्होंने बताया कि मुझे कार्यों के बारे में इतनी जानकारी हो गई है कि इंजीनियर योजना बनाने के पहले हमसे पूछते हैं।
सुश्री कला बाई ने बताया कि समूह ने मनरेगा योजना के साथ मिलकर गाँव में चेकडेम और तालाब बनवाये। इससे गाँव का जल-स्तर बढ़ गया। उन्होंने बताया कि 15 गाँव से काम की शुरूआत की थी। आज इसका दायरा बढ़ गया है।

सुश्री रामकली बाई ने कहा कि पहले पूरे गाँव का नक्शा बनाया और फिर गाँव में उपयुक्त जगह देखकर खेत-तालाब और मेढ़-बँधान के कार्य करवाये। इससे खेतों में पानी की उपलब्धता बढ़ी।

सुश्री रश्मि बाई ने बताया कि संघ अपने परिवार की तरह है। सभी महिलाएँ सप्ताह में एक दिन बैठती हैं। उन्हें अपने हक की लड़ाई लड़ने की समझाइश देते हैं। ग्रामीण महिलाओं को राशन-कार्ड और सामाजिक सुरक्षा पेंशन दिलवाने में सहयोग करते हैं। नर्मदा महिला संघ में 22 हजार से अधिक महिलाएँ शामिल हैं। बैतूल जिले के 300 गाँव में 1750 महिला स्व-सहायता समूह बनाये गये हैं।

संस्थान के महानिदेशक श्री आर. परशुराम ने कहा कि संघ 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम" का जीता-जागता उदाहरण है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन लाने के लिये सिर्फ शहर नहीं गाँव तक कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सामाजिक परिवर्तन एक दिन की बात नहीं है। श्री परशुराम ने कहा कि आत्म-विश्वास हो, तो कोई काम असंभव नहीं है।

नर्मदा महिला संघ की पदाधिकारियों ने अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति संस्थान में व्याख्यान-माला को किया संबोधित

महिलाएं अब घुट-घुट कर जीने की जगह बन रहीं हैं विकास में सहभागी

भोपाल, (एजेंसी)। महिलाएं अब घुट-घुटकर जीने की जगह गांव के विकास में सहभागी बन रही हैं। नर्मदा महिला संघ का मुख्य उद्देश्य आजीविका के लिए बेहतर अवसर, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकना, हक और अधिकार दिलाना तथा महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी सुनिश्चित करना है। नर्मदा महिला संघ की पदाधिकारियों ने यह बात अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में व्याख्यान-माला 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम' में 'अनहर्ड वाइसेस ऑफ वूमेन लीडर्स ऑफ नर्मदा महिला संघ, बैतूल' विषय पर व्याख्यान में कही।

- नर्मदा महिला संघ से जुड़ी है 22 हजार से ज्यादा महिलाएं
- बैतूल जिले के 300 गांवों में बनाए 1750 महिला स्व-सहायता समूह

शनिवार को भोपाल में अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम श्रृंखला में नर्मदा महिला संघ की बैठक की सुश्री रश्मि बाई, रामकली बाई, कला बाई, संध्या बाई और ममता बाई ने विचार व्यक्त किए।

आधिकारिक जानकारी के अनुसार नर्मदा महिला संघ की सदस्य ममता बाई लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी, मसूरी में तीन बार प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों को संबोधित कर चुकी हैं। उन्होंने कहा कि स्व-सहायता समूह की किसी भी महिला के साथ अत्याचार होता है, तो उसे न्याय दिलाने के लिए संघर्ष करती हूं। गांव की महिलाओं के लिए हमेशा जीने-मरने को तैयार रहती हूं। उन्होंने बताया कि महिलाओं को हिंसा से मुक्ति दिलाने के लिए कई लोगों की शराब छुड़वाई है। संध्या बाई ने कहा कि मैं स्व-सहायता समूह में रिकार्ड तैयार करती थी। समूह की महिलाओं ने मुझे गांव की सरपंच बनाया और अब हम महिलाओं के साथ मिलकर गांव के विकास की योजना बनाते हैं और उनका क्रियान्वयन करते हैं। उन्होंने बताया कि मुझे कार्यों के बारे में इतनी जानकारी हो गई है कि इंजीनियर योजना बनाने के पहले हमसे पूछते हैं।

गांव में बनाए चेकडैम और तालाब

सुश्री कला बाई ने बताया कि समूह ने, मनरेगा योजना के साथ मिलकर गांव में चेकडैम और तालाब बनवाए। इससे गांव का जल-स्तर बढ़ गया। उन्होंने बताया कि 15 गांव से काम की शुरुआत की थी। आज इसका दायरा बढ़ गया है।

पहले बनाया पूरे गांव का नक्शा

सुश्री रामकली बाई ने कहा कि पहले पूरे गांव का नक्शा बनाया और फिर गांव में उपयुक्त जगह देखकर खेत-तालाब और मेढ़-बंधान के कार्य करवाए। इससे खेतों में पानी की उपलब्धता बढ़ी।

संघ अपने परिवार की तरह

सुश्री रश्मि बाई ने बताया कि संघ अपने परिवार की तरह है। सभी महिलाएं सप्ताह में एक दिन बैठती हैं। उन्हें अपने हक की लड़ाई लड़ने की समझाइश देते हैं। ग्रामीण महिलाओं को राशन-कार्ड और सामाजिक सुरक्षा पेंशन दिलवाने में सहयोग करते हैं। नर्मदा महिला संघ में 22 हजार से अधिक महिलाएं शामिल हैं। बैतूल जिले के 300 गांव में 1750 महिला स्व-सहायता समूह बनाए गए हैं।

आत्मविश्वास हो तो कोई काम असंभव नहीं : परशुराम

संस्थान के महानिदेशक आर. परशुराम ने कहा कि संघ 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम' का जीता-जागता उदाहरण है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन लाने के लिए सिर्फ शहर नहीं गांव तक कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सामाजिक परिवर्तन एक दिन की बात नहीं है। श्री परशुराम ने कहा कि आत्म-विश्वास हो, तो कोई काम असंभव नहीं है।

Narmada Mahila Sangh at work

■ Staff Reporter

WOMEN are now participating in the development of the village instead of living in isolation. The main objective of the Narmada Mahila Sangh is to provide better opportunities for livelihood, prevent violence against women, empowering rights and to ensure political participation of women.

This was said by the office bearers of the Narmada Mahila Sangh during the lecture on the topic 'Unheard Voices of Women Leaders of Narmada Mahila Sangh, Betul' during the Lecture Series 'Asardaar Parivartan-Tikau Parinam' held at Atal Behari Vajpayee Institute of Good Governance and Policy Analysis.

Mamta Bai also gives lectures at Academy of Administration, Mussoorie.

Member of the Narmada Mahila Sangh, Mamta Bai has also addressed the trainee IAS officers 3 times at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie. She said that, if atrocity is done with any woman of the self-help group, she struggles to get justice. I am always ready to live and die for the women of the village. She told that, to protect women from violence, she compelled many persons to quit liquor. Mamta Bai said that, my brother has only studied, but I am educated in true sense.

'Now engineers ask us': Sandhya Bai said that 'I used to prepare records in the self-help group'. The women of the group made me the village Sarpanch and now, together with the women, we prepare development plans and implement them for the development of the village. She said that, I have become so familiar with the works that engineers ask us before making plans.

Water level increased due to water conservation works: Kala Bai informed that, the group, along with the MNREGA scheme, got the check dams and ponds built in the village. This increased the water level of the village. She averred that work was started in 15 villages and today, its area has widened.

Khet-Talaab and Medh-Bandhan: Ramkali Bai said that, she got the map of the entire village made first and after earmarking the appropriate place in the village, Khet-Talaab and boundaries were constructed. This has increased the availability of water in the fields.

Advice to fight for rights: Rashmi Bai said that, the Sangh is like her family. All the women meet once a week. They are advised to fight for their rights. Help is provided to the women in getting ration cards and social security pension.

Narmada Mahila Sangh has more than 22,000 women members. 1,750 women self-help groups have been formed in 300 villages of Betul district.

Need for work from city to village for change: Director General of the Institute, R Parshuram said that, the Narmada Mahila Sangh is a live example of 'Asardaar Parivartan-Tikau Parinam'. He said that, there is a need to work not only in city, but upto the village level to bring the change. He said that, social change is not a matter of a day. Parashuram said that, no work is impossible, if there is self-confidence. Chief Advisor of the Institute M M Upadhyay lauded the activities of the Narmada Mahila Sangha by reciting a poem. The programme was conducted by the Chief Advisor, Girish Sharma.

Women expressing themselves in the meeting of Narmada Mahila Sangh at Atal Bihari Good Governance and Policy Analysis Institution on Saturday.

महिलाएं अब घुट-घुट कर जीने की जगह विकास में बन रही हैं सहभागी

अटल बिहारी सुशासन संस्थान में व्याख्यान माला

पीपुल्स ब्यूरो ● भोपाल

editor@peoplessamachar.co.in

महिलाएं अब घुट-घुटकर जीने की जगह गांव के विकास में सहभागी बन रही हैं। नर्मदा महिला संघ का मुख्य उद्देश्य आजीविका के लिए बेहतर अवसर, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकना, हक और अधिकार दिलाना तथा महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी सुनिश्चित करना है।

नर्मदा महिला संघ की पदाधिकारियों ने यह बात अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में व्याख्यान-माला 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम' में 'अनहर्ड व्हासेस ऑफ वूमेन लीडर्स ऑफ नर्मदा महिला संघ, बैतूल' विषय पर व्याख्यान में कही।

नर्मदा महिला संघ की सदस्य ममता बाई ने कहा कि स्व-सहायता समूह की किसी भी महिला के साथ अत्याचार होता है, तो उसे न्याय दिलाने के लिए संघर्ष करती हूं। गांव की महिलाओं के लिए हमेशा जीने-मरने को तैयार रहती हूं।

परिवर्तन के लिए शहर से गांव तक कार्य की जरूरत

संस्थान के महानिदेशक आर परशुराम ने कहा कि संघ 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम" का जीता-जागता उदाहरण है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन लाने के लिए सिर्फ शहर नही गांव तक कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सामाजिक परिवर्तन एक दिन की बात नही है।

आर परशुराम